डॉ० रामनिवास 'मानव' के दोहे

सूख गई संवेदना, मरी मनों की टीस।
अब कोई रोता नहीं, एक मरे या बीस।।
डाकू जी मुखिया बने, चोर–उचक्के पंच।
अब सामाजिक न्याय का, खूब सजा है मंच।।
खेल शिकारी का वही, वही दन्त–नाखून।
ज़ारी है अब भी यहां, जंगल का कानून।।
अभयारण्य बना आज, सारा भारत देश।
संरक्षित शैतान हैं, संकट में दरवेश।।
शंकर जी का देश है, दुर्गा जी का वेश।
फिर भी नोंचे जा रहे, द्रोपदियों के केश।।
वही पालकी देश की, जनता वही कहार।
लोकतन्त्र के नाम पर, बदले सिर्फ़ सवार।।
चूहा कुतरे चूल को, कौवा कुतरे चाम।
नेता कुतरे देश को, भली करें अब राम।।
कहीं छूट है लूट में, कहीं लूट की छूट।
लूट–छूट के बीच में, रिश्ता यहां अटूट।।
जायेंगे जब–जब भरे, लूट–लूट सन्दूक।
तब–तब गूंजेगी यहां, बार–बार बन्दूक।।
सुबह खेल है लूट का, सायं कुर्सी–रेस।
देख रहा प्रतियोगिता, दर्शक बनकर देश।।

दस से वर्ष पचास फिर, गई पीढ़ियां तीन।
आरक्षण का मामला, अभी विचाराधीन।।
तुष्टिकरण का भूत अब, ऐसा हुआ सवार।
झूम रहे नेता सभी, नाच रही सरकार।।
गाली देकर धर्म को, नहीं करेंगे पाप।
धर्मनिरपेक्ष फिर भला, कैसे होंगे आप।।
गीता और कुरान का, अब तो ऐसा मेल।
अंग–संग जैसे रहें, माचिस–मिट्टी तेल।।
सच है यह सौ फ़ीसदी, मेरा देश महान।
अल्पमत की तुष्टि जहां, बहुमत का अपमान।।
लालकिले के शीश पे, बौने चढ़े अनाम।
बाअदब, बामुलाहजा, दिल्ली तुझे सलाम।।
योद्धा को फांसी मिली, मुखबिर को सम्मान।
सदा रहा इस देश में, केवल यही विधान।।
महफ़िल थी इन्सान की, मुद्दा था भगवान।
वक्ता तो थे देवता, निर्णायक शैतान।।
भारत मां की हो गई, ऐसी हालत आज।
पैरों में हैं बेड़ियां, और शीश पर ताज।।
आत्मा किसी शहीद की, आई हिन्दुस्तान।
हाल देख कहने लगी, व्यर्थ गया बलिदान।।

❐

७०६, सैक्टर–१३, हिसार–१२५००५ (हरि०)
फोन : ०१६६२–२३८७२०